Costal Treding Centers of Satvahan Empire
सातवाहन साम्राज्य के तटीय व्यापारिक केन्द्र

मनोज कुमार
(शोध–छात्र)
प्राचीन भारतीय इतिहास,
संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

Received Dec. 14, 2017 Accepted Jan. 18, 2018

ABSTRACT *सातवाहन साम्राज्य, मौर्यों राजवंश के पतन के बाद ईसा पूर्व की द्वितीय सदी से ईस्वी सन की द्वितीय सदी तक दक्षिण भारत के वर्तमान महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश तथा कर्नाटक क्षेत्र में विस्तृत था। इस साम्राज्य के इतिहास में सबसे लम्बे समय तक शासन करने की उपलब्धि के अलावा इसकी मजबूत अर्थव्यवस्था की भी बात की जाती है। अर्थव्यवस्था की मजबूती का आधार इन्होंने व्यापार एवं वाणिज्य को बनाया। इनके व्यापार एवं वाणिज्य की गाथा देशी तथा विदेशी सभी प्रकार के साहित्य में मिलती है। सातवाहन साम्राज्य के व्यापार एवं वाणिज्य के संचालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण योगदान व्यापार केन्द्रों का था। ये व्यापार केन्द्र आन्तरिक तथा तटीय दो प्रकार के थे। प्रस्तुत शोध पत्र की विषय वस्तु के अनुरूप यहां बाह्य व्यापार केन्द्रों का वर्णन करना ही अपेक्षित है। तात्कालिक यूरोपियन भूगोलवेताओं के अनुसार सातवाहन साम्राज्य के तटों पर इस काल में अनेक बड़े बंदरगाह थे। इन बंदरगाहों की उपयोगिता कई तरह की थी। इन्हीं के माध्यम से सातवाहन व्यापारी विदेशों में तथा विदेशी व्यापारी सातवाहन साम्राज्य से व्यापारिक वस्तुओं का लेन–देन करते थे। पेरिप्लस के अध्ययन से पता चलता है कि उस समय भारतीय समुद्र तट पर लगभग 24 बंदरगाहें थी। शोध–पत्र की प्रासंगिकता के अनुसार यहां 24 में से सातवाहन साम्राज्य से संबंधित बंदरगाहों का ही वर्णन किया गया है।*

Keywords: बन्दरगाह–तटीय व्यापार केन्द्र, शातकर्णि–सातवाहन शासकों का उपनाम, एरिथ्रियन–सी–अरब सागर का यूनानी नाम

प्रस्तावना: सातवाहन साम्राज्य के पूर्वी तथा पश्चिमी तटों पर अनेक बन्दरगाह अर्थात् अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के व्यापारिक केन्द्र अवस्थित थे जिनका वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है:–

शूपरिक (सोपारा):– शूपरिक सातवाहन साम्राज्य के पश्चिमी तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह था, जिसकी पहचान प्रो. एस.एन. मजूमदार ने महाराष्ट्र के (थाना जिले में आधुनिक सोपारा) रूप में की है।[1] पेरिप्लस में भी सोपारा का उल्लेख आया है।[2] महावंश के अध्ययन से पता चलता है कि ताम्रपर्णि के प्रथम राजा विजय ने सोपारा से ताम्रपर्णि (श्रीलंका) तक की यात्रा की थी।[3] इससे प्रतीत होता है कि शूपरिक का पश्चिमी जगत के साथ–साथ श्रीलंका से भी व्यापार चलता था।

टॉल्मी के अनुसार सोपारा के बन्दरगाह से विदेशों के साथ व्यापार चलता रहा, लेकिन मौसमी हवाओं का पता लगने से सातवाहन साम्राज्य और लाल सागर के बीच सीधा व्यापारिक मार्ग खुल जाने से पश्चिम की तरफ से आने वाले जहाज सीधे मालाबार के समुद्री तट पर पहुँचने लगे। परिणामस्वरूप मुजिरिस बन्दरगाह की महत्ता बढ़ गई, जिससे सोपारा से होने वाला व्यापार धीरे–धीरे कम होने लगा तथा अंत में सोपारा एक नाम मात्र का गाँव रह गया।[4]

सातवाहन काल में सोपारा में घोड़ों का व्यापार होता था। पेरिप्लस का लेखक बताता है कि बेरीगाजा के बाद सोपारा सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाजार था।[5]

2. कल्याण:– प्राचीन समय में मुम्बई के पास थाना जिलें में कल्याण एक अन्य प्रसिद्ध बन्दरगाह था। यहाँ सातवाहन साम्राज्य के भीतरी भागों से सामान उस रास्ते से भेजा जाता था जो बाद में हैदराबाद से दौलताबाद को जाता था। कल्याण सातवाहन साम्राज्य के पश्चिम की ओर व्यापार के निकास का मुख्य केन्द्र था। पेरिप्लस के अनुसार यह दक्षिणापथ का व्यापारिक नगर था। उसके यहां आगमन के समय यहां पर विदेशी व्यापार निषिद्ध था। यहाँ से जाने वाले विदेशी जहाजों को

1. Haripada, Chakraborti-op.cit., p. 101
2. योगेन्द्र मिस्र–प्राचीन भारतीय व्यापार और समुद्रयात्रा, जे.आर.ए.एम. भाग–47, पृ. 4–5,
3. महावंश, VI, पृ. 46–47
4. मोतीचन्द्र–सार्थवाह – पृ. 103
5. पेरिप्लस, 52

समीपवर्ती बन्दरगाह भड़ौच भेज दिया जाता था।[6] कन्हेरी और जुन्नार के गुहालेखों में कल्याण का नाम एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र के रूप में उल्लेखित है। इन गुहालेखों में इस नगर के घनिष्ठ सौदागरों और कारीगरों के नाम शामिल हैं। [7]

पेरिप्लस के समय में कल्याण के व्यापार निषेध का एक विशेष कारण था। कल्याण सातवाहन साम्राज्य के विदेशी व्यापार का सबसे बड़ा बंदरगाह था। अत: उनके राज्य को आर्थिक क्षति पहुँचने के कारण कल्याण जाने वाले विदेशी जहाजों को शकों ने लूटना आरंभ किया। भड़ौच पर शकों का आधिपत्य होने के कारण ये इन जहाजों को पकड़कर भड़ौच ले जाते थे।[8] इस व्यापर निषेध के कारण कल्याण की व्यापारिक महत्ता द्वितीय शताब्दी में क्षीण होने लगी थी। यही कारण है कि द्वितीय शताब्दी के लेखक टॉल्मी के विवरण में पश्चिमी समुद्र-तट के बंदरगाहों में कल्याण का नाम नहीं मिलता। द्वितीय शताब्दी के भारतीय अभिलेखों में भी इस नगर का नाम नहीं मिलता है।[9] इस समय के कार्ले के अभिलेख से पता चलता है कि कल्याण के स्थान पर धान्यकटक महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्र बन गया था। इस अभिलेख के अनुसार धान्यकटक में छह यूनानी सौदागर रहते थे जो सातवाहन साम्राज्य और रोम के बीच व्यापार चलाते थे।[10] ऐसा लगता है कि यूनानी सौदागर इस समय यहाँ से गन्ध-द्रवों को स्वदेश ले जाते थे जहाँ इनकी विशेष मांग रहती थी। कन्हेरी के अभिलेख[11] में कल्याण नगर का वर्णन आता है, जिससे पता चलता है कि सातवाहनों द्वारा द्वितीय शताब्दी ई. के अन्तिम वर्षों में कोंकण को जीतने के कारण पुन: कल्याण की महत्ता बढ़ गई थी। इस विजय के बाद कल्याण का व्यापार फिर से खुल गया था।[12]

भरूकच्छ:- प्रथम शताब्दी ई. के समय में समुद्री रास्तों से व्यापार का विकास साबित करता है कि पूर्वी और पश्चिमी तट पर अनेक बंदरगाह थे। अनेक साक्ष्यों से पता चलता है कि प्राचीन भरूकच्छ पश्चिमी तट पर सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह था। इस बंदरगाह की आधुनिक भड़ौच के रूप में पहचान की जाती है जो कि नर्मदा नदी के तट पर स्थित था।[13] इस व्यापार केन्द्र की भौगोलिक अवस्थिति $21^0$46' उत्तरी अक्षांश तथा 73^0 पूर्वी देशान्तर थी।[14] भरूकच्छ अपनी महत्ता को प्रथम शताब्दी ई. में बनाऐ हुए था, क्योंकि जहाज दक्षिण जाने से पहले यहाँ पर पहुँचते थे। उज्जैन तथा प्रतिष्ठान से आने वाले अनेक स्थल मार्ग भी भरूकच्छ को साम्राज्य के आन्तरिक भागों से जोड़े हुए थे। व्यापारिक केन्द्र के रूप में पेरिप्लस में भरूकच्छ का उल्लेख विशेष रूप से हुआ है। पेरिप्लस से पता चलता है कि बाहरी देशों से इस नगर में मदिरा, शीशा, सूक्ष्म वस्त्र, कटिसूत्र तथा स्वर्ण एवं रजत मुद्रायें मंगाई जाती थी।[15] राजाओं के बहुमूल्य बर्तन, संगीत-निपुण बालक तथा सुन्दर युवतियों आदि का आयात भड़ौच की बंदरगाह से होता था। तांबा, रांगा, मूंगा, पुखराज, सुरमा तथा अच्छे से अच्छे रोगन भी यहाँ आते थे।[16] यहाँ से बाहर जाने वाली वस्तुओं में हाथीदांत, रेशमी तथा सूतीवस्त्र, मिर्च, बहुमूल्य पत्थर एवं मलमल उल्लेखनीय है।[17] जटामांसी, कुष्ठ, गुग्गुल, अकीक, लोहितांक एवं क्षौमवस्त्र आदि का भी यहां से निर्यात किया जाता था।[18]

सातवाहनों की राजधानी प्रतिष्ठान के साथ भरूकच्छ का वाणिज्यिक संपर्क था। यहां से तगर, पैठन (प्रतिष्ठान) और दौलताबाद होते हुए एक मुख्य मार्ग मारकिंड पहुँचता था। सातवाहनों के साम्राज्य का यही प्रसिद्ध राजमार्ग था जो स्वभावत: कल्याण में समाप्त होता था।[19] पेरिप्लस के अनुसार पैठन और तगर से काफी मात्रा में यहाँ लोहितांक आता था।[20] प्लिनी के अनुसार भारतीय व्यापारी भरूकच्छ से रोम में विलासिता की सामग्री भेजते थे। रोम के नागरिकों में भारतीय वस्तुऐं बहुत ही लोकप्रिय थी। विलासप्रियता के कारण रोम साम्राज्य की एक करोड़ स्वर्ण मुदायें प्रतिवर्ष सातवाहन साम्राज्य में आती थी।[21]

---

6. पेरिप्लस, 43
7. ब्यूलर-ए.एस.डब्ल्यू.आई., भाग-5, पृ. 79, फलक 51-4
8. मोतीचन्द्र-पूर्वोक्त, पृ. 103
9. मोतीचन्द्र-पूर्वोक्त, पृ. 102
10. ब्यूलर-ए.एस.डब्ल्यू.आई., भाग-4, पृ. 113, फलक 54-21
11. लूडर्स संख्या 1020
12. मोतीचन्द्र-पूर्वोक्त, पृ. 103
13. Haripad Chakarborti – op.cit, p. 93
14. पेरिप्लस, 38
15. वही, 47
16. मोतीचन्द्र-पूर्वोक्त, पृ. 117
17. पेरिप्लस - 42
18. मोतीचन्द्र-पूर्वोक्त, पृ. 117
19. जे.आर.ए.एस. 1901, पृ. 537-552
20. पेरिप्लस, 51
21. प्लिनी-नेचुरल हिस्ट्री -12, पृ. 18

सिमिलिया:– पेरिप्लस के अनुसार सिमिलिया एक बाजार नगर था।[22] प्लिनी ने इस स्थान को मोतियों तथा मत्स्यन का केन्द्र बताया है।[23] टॉल्मी ने इस स्थान का नाम चोल बताया है जबकि कन्हेरी अभिलेख में इस स्थान को चेमुला कहा गया है और इसे मुंबई से 20 मील दक्षिण में बताया है।[24] इस अभिलेख में सिमिलिया को सोपारा तथा कल्याण बंदरगाह जैसा महत्वपूर्ण बताया गया है। इन तीनों बन्दरगाहों को पेरिप्लस में भी क्रमश: वर्णित किया गया है। साथ ही पेरिप्लस इन तीनों के समान कोई अन्य बाजार नहीं बताता। अभिलेख में वर्णन मिलता है कि एक लोहार तथा उसके बेटे ने इस स्थान को एक मार्ग से जोड़ा। यह लोहार किसी कारीगर समुदाय तथा व्यापारी वर्ग का सदस्य था जो मार्ग निर्माण तथा आर्थिक पहलू जैसे मुद्दों को समझता था।[25]

सिमिलिया के वर्णन में सबसे अधिक रूचि टॉल्मी ने दिखाई है, जोकि इस क्षेत्र में कई वर्ष रहा था। टॉल्मी ने इसे बाजार केन्द्र बताया है।[26] पेरिप्लस का लेखक लिखता है कि दूसरी शताब्दी ईस्वी में यह केन्द्र सूती वस्त्र व्यापार का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन गया था। संपूर्ण विश्व में यहाँ से सूती वस्त्र का निर्यात किया जाने लगा था।[27]

मांडागोरा:– सातवाहन काल के इस बंदरगाह व्यापार केन्द्र का वर्णन, पेरिप्लस का लेखक सिमिलिया के तुरंत बाद करता है।[28] शॉफ बताता है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून के समय यह बंदरगाह बंद रहता था। यह केन्द्र टीक तथा काली लकड़ी के व्यापार का मुख्य केन्द्र था, साथ ही यहां समुद्री जहाजों का निर्माण होता था।[29] रॉलिंसन ने इस बंदरगाह की पहचान बैकोट के रूप में की है।[30] यह ध्यान देने योग्य बात है कि जहां पेरिप्लस में मांडागोरा के बाद पल्लैपटमै का वर्णन मिलता है वहीं टॉल्मी इन्हें एक दूसरे से विपरित क्रमांक पर स्थान देता है।

पल्लैपटमै:– टॉल्मी ने इस स्थान की पहचान बाल्टीपटन से की है। यूले ने इसे वर्तमान डैबाल कहा है। पहचान करने पर इसकी सबसे ज्यादा संभावना डाभोल या परिपटन के रूप में बनती है।[31] एस.एन. मजूमदार ने इसे दक्षिण कोंकण का मुख्य बंदरगाह माना है।[32] परिपटन का अर्थ सामान्य रूप परि–अर्थात् विंध्यन के दक्षिण का तटीय क्षेत्र तथा पटन अर्थात् नगर या बंदरगाह बताया गया है।[33]

ध्यान देने योग्य बात यह है कि पेरिप्लस तथा टॉल्मी ने विभिन्न बंदरगाहों की भौगोलिक अवस्थिति की सूची में काफी अन्तर दिखाया है। जैसे पेरिप्लस[34] में पल्लैपटमै तथा बेजांटियम के बीच मेलिजिगरस बंदरगाह को बताया गया है। जबकि टॉल्मी ने मेलिजिगरस को सिमिलिया से 20 मील दक्षिण में अवस्थित बताया है। इस समीकरण में इस अन्तर का सबसे बड़ा कारण यह है कि जहाँ पेरिप्लस ग्यारह बंदरगाहों का वर्णन करता है वहीं टॉल्मी इस क्षेत्र की सिर्फ दो बंदरगाहों का वर्णन करता है। इसका निष्कर्ष यही निकाला जा सकता है कि एरिके (सातवाहन साम्राज्य का तटीय क्षेत्र) में दूसरी शताब्दी ईस्वी में व्यापार में निसंदेह गिरावट आई जिससे बंदरगाहों की संख्या स्वत:स्फूर्त घटने लगी।[35]

बेजान्टियम:– सातवाहन काल के तटीय व्यापार केन्द्रों में एक नाम बेजान्टियम का भी आता है। पेरिप्लस में इसे मेलिजेगारा (आधुनिक जयगढ़ या राजपुर) के बाद दर्शाया गया है जबकि टॉल्मी इसे मांडागोरा के बाद रखता है। एस.एन. मजूमदार ने रॉलिन्सन का समर्थन करते हुए इसे वर्तमान विजाड़रोग बता कर पश्चिमी तट का एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह बताया

---

22. पेरिप्लस, 53
23. प्लिनी, VI. 54
24. ल्यूडर्स संख्या, 996
25. Haripad Chakarborti-op.cit., p. 106
26. टॉल्मी, VII. 1.6
27. पेरिप्लस, 53
28. पेरिप्लस, 49
29. इम्पिरियल गजेटियर, VI. 383; शॉफ, पृ. 201
30. Rawlinson – Intercourse between India and the western world, p. 119
31. Ibid
32. एस.एन.मजूमदार–नॉटस ऑन टॉल्मी, पृ. 347
33. Haripad Chakarborti-op.cit., p. 108
34. पेरिप्लस–53
35. Haripad Chakarborti – op.cit., p 108-109

है।[36] बेजान्टियम को अभिलेखों में वैजयन्ती भी कहा गया है। महावंश में इस स्थान का नाम बनवासी मिलता है।[37] वर्तमान समय में यह उत्तरी कन्नड़ तट पर अवस्थित है।[38]

नासिक अभिलेख से पता चलता है कि गौतमीपुत्र ने दक्षिण अभियानों के समय वैजयन्ती में अपनी सेना का पड़ाव रखा, जिससे पता चलता है कि यह क्षेत्र सातवाहन राज्य का अभिन्न अंग था। बाद में कुतु शातकर्णि के समय यह केन्द्र राजधानी के रूप में उभर कर सामने आया।[39] यह स्थान इस क्षेत्र का एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था जैसा कि बौद्ध धर्म से सम्बन्धित कार्ले अभिलेख से परिलक्षित होता है।[40]

कोट्टापटनमः–कोट्टापटनम वर्तमान में आंध्रप्रदेश के नेल्लोर जिले के वकाडु मण्डल का एक तटीय गांव है। यहाँ से प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भूमध्यसागरीय देशों तथा चीन के साथ सम्बंध होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। टॉल्मी ने इसे कोट्टिस नाम दिया है तथा इसे सातवाहन काल का एक अति महत्वपूर्ण केन्द्र बताया है।[41]

कोट्टापटनम से ऐसे रोमन मृदभांड मिले हैं जो इससे पहले अरिकेमेडु आदि स्थानों से मिलते रहे हैं। ह्वीलर के अनुसार प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी ईस्वी में अरिकेमेडु व्यापार वाणिज्य का केन्द्र रहा है।[42] चीन के साथ व्यापार होने के प्रमाण दक्षिण भारत में अरिकेमेडु के अलावा इसी स्थान से प्राप्त हुए हैं। ह्वीलर के अनुसार इन दोनों स्थानों से ही सातवाहन साम्राज्य–रोमन व्यापार के प्रमाण भी भारी मात्रा में प्राप्त होते हैं।[43]

कंटकशीलाः– सातवाहन साम्राज्य की इस तटीय व्यापार नगरी का वर्णन अमरावती अभिलेख से मिलता है, जो किसी उत्तरा नामक दानकर्ता द्वारा लिखवाया गया है।[44] यह निश्चित रूप से टॉल्मी द्वारा बताई गई कंटकसाइला ही है।[45] वर्तमान में इसे घंटशाला कहा जाता है। यह मसलीपटनम से 13 मील पश्चिम में स्थित है तथा अब कृष्णा नदी के द्वारा समुद्रतट से जुड़ा हुआ एक सामान्य गांव मात्र रह गया है।

टॉल्मी ने कंटकशीला को व्यापार वाणिज्य के उद्देश्य से एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बताया है। इसका कारण इसकी समुद्र तट से उचित दूरी थी जोकि आंतरिक क्षेत्रों से बसे हुए क्षेत्रों को नदी द्वारा समुद्र से जोड़ कर उनके सामान को अन्तर्राष्ट्रीय मण्डियों में भेजने का कार्य करने में सक्षम था।[46]

वोगल ने कृष्णा–गोदावरी क्षेत्र से समुद्र के रास्ते होने वाले व्यापार का वर्णन किया है जो कि कंटकशीला, पलोरा तथा कोडुरा के पश्चिम में अवस्थित थे। वेनुकोंडा (जिला गुंटुर) से प्राप्त 68 से 217 ई. के रोमन सिक्कों तथा नेल्लोर तथा गुड्डप्पा जिलों से प्राप्त सिक्कों से डॉ. वोगल की शोध को समर्थन मिलता है।[47] रेप्सन ने मद्रास तथा कुडाल्लोर के बीच के कारोमण्डल तट से प्राप्त पुलुमावि–II के सिक्कों के आधार पर बताया है कि पुलुमावि के समय कंटकशीला एक महत्त्वपूर्ण व्यापार केन्द्र रहा होगा।[48] इस स्थान से सिलोन के साथ व्यापार–वाणिज्य के महत्वपूर्ण संकेत प्राप्त होते है।[49]

---

36. टॉल्मी, पृ. 348; रॉलिन्सन, पृ. 119
37. महावंश, XII, 41
38. बम्बई गजेटियर, 1, ii पृ. 278 संख्या 2
39. एपिग्राफी इण्डिका, VIII पृ. 71, ल्यूडर्स, 1125
40. ल्यूडर्स, 87
41. K.R.Subramaniam-Budhist Remains in Andhra and the History of Andhra between 225 & 610 A.D. Madras 1989, p. 134
42. R.E.M. Wheeler – 'Arikamedu : An Indo-Roman Trading Station on the East Coast of India', AI, No. 2 (1946) pp 34-35 and 45-46
43. वही
44. लूडर्स 1303, A.S.S.I, Vol. I, PL. LXI, No. 54
45. टॉल्मी, VII. I. 15
46. Ancient History of Decan, p. 85
47. J.R.A.S. 1904, pp 599 ff.
48. E.J.Rapson-Andhras and Western Kshatrapas, p. 24
49. C.f. Ancient India No. 5, p. 53